|  |
| --- |
| **मेरे कुछ पल** |
| ***कुछ सोच, कवितायें, और पल*** |
| **प्रवीण कुमार राणा** |

[**मेरे कुछ पल**](http://pravinkumarrana.wordpress.com/)

***कुछ सोच, कवितायें, और पल***

[**लोकपाल**](http://pravinkumarrana.wordpress.com/2011/04/19/%e0%a4%b2%e0%a5%8b%e0%a4%95%e0%a4%aa%e0%a4%be%e0%a4%b2/)

**अन्नागिरी, जनता जगी,**

**सरकार हिली, सहमति मिली!**

**नेतागिरी, राजनीति जगी,**

**संसद हिली, असहमति मिली!**

**सालों बाद, लोकपाल?**

[**दीदार**](http://pravinkumarrana.wordpress.com/2010/09/12/%e0%a4%a6%e0%a5%80%e0%a4%a6%e0%a4%be%e0%a4%b0/)

**काश खुदा एक पल के लिए,**

**उनको भी द्रिष्टि बक्श दे,**

**जो इस हुस्न के दीदार से महरूम है!**

**पता तू चले,**

**ख़ुदा को भी कभी फुर्सत मिलती है**

**तब ही तू उसने आपको बनाया है!**

**ओ मेरे महबूब!**

[**तू क्यूँ नहीं ?**](http://pravinkumarrana.wordpress.com/2010/05/13/%e0%a4%a4%e0%a5%82-%e0%a4%95%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a5%82%e0%a4%81-%e0%a4%a8%e0%a4%b9%e0%a5%80%e0%a4%82/)

**तू इतनी दूर क्यूँ?  
रात को हर राज बताता रहा में,  
तुमसे आपने आप को छुपाता रहा में!**

**तू इतनी दूर क्यूँ ?  
तेरे इंतज़ार को जिंदगी मानता रहा में,  
तुमसे आपनी तन्हाई छुपाता रहा में!**

**तू इतनी दूर क्यूँ ?  
ख्यालों को सच मान जीता रहा में,  
तुमसे आपना प्यार छुपाता रहा में!**

**तू इतनी दूर क्यूँ?  
दुनिया को तेरा नाम बताता रहा में,  
आपना इकरार पर तेरे से छुपाता रहा में!**

**में तेरे इतना करीब क्यूँ , तू क्यूँ नहीं ?**

[**तुम याद आई**](http://pravinkumarrana.wordpress.com/2009/10/15/%e0%a4%a4%e0%a5%81%e0%a4%ae-%e0%a4%af%e0%a4%be%e0%a4%a6-%e0%a4%86%e0%a4%88-%e0%a4%87%e0%a4%a4%e0%a4%a8%e0%a4%be/)

**जिंदिगी का हर पल,  
सदियों में बदल गया,  
तुम याद आई इतना!**

**एक बूंद की प्यास में,  
मैं सागर पी गया,  
तुम याद आई इतना!**

**[जिंदिगी गुलिस्ताँ भी है](http://pravinkumarrana.wordpress.com/2009/08/05/%e0%a4%9c%e0%a4%bf%e0%a4%82%e0%a4%a6%e0%a4%bf%e0%a4%97%e0%a5%80-%e0%a4%97%e0%a5%81%e0%a4%b2%e0%a4%bf%e0%a4%b8%e0%a5%8d%e0%a4%a4%e0%a4%be%e0%a4%81-%e0%a4%ad%e0%a5%80-%e0%a4%b9%e0%a5%88/" \o "Permalink to जिंदिगी गुलिस्ताँ भी है)**

**जिंदिगी सुर्ख रेत की तरह थी!**

**आपके स्पर्श से जाना,**

**जिंदिगी गुलिस्ताँ भी है!**

**जब हम आपनी ही यादों में तनहां थे!**

**पल पल ज़िन्दगी  सवाली थी!**

**आपके प्यार से जाना,**

**जिंदिगी गुलिस्ताँ भी है!**

**फरमाईश थी!**

**सुबह रंगीन थी, आपके जुल्फ की इनयात थी!  
शाम मदहोस थी, आपके लब की गुस्ताखी थी!   
रात हसीन थी, आपके जिस्म की नजाकत थी!   
दोपहर व्यसता थी, आपके गहनों की जो** **फरमाईश थी!**

[**इस रात का क्या करे**](http://pravinkumarrana.wordpress.com/2009/06/20/%e0%a4%87%e0%a4%b8%e0%a5%87-%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%a4-%e0%a4%95%e0%a4%be-%e0%a4%95%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a4%be-%e0%a4%95%e0%a4%b0%e0%a5%87/)**!**

**आपकी यादों में दिन तू गुजर जाता है!**

**पर इस रात का क्या करे?**

**जो आकर रुक सी जाती है!**

**आपका ये चाँद,**

**अनगिनत तारों भरी रात में भी,**

**कभी कभी,**

**आपनी तन्हाई बादलों के चिल्मन में छुपा कर,**

**मुस्कुराता है!**

**हम नहीं जानते**

**प्यार क्या है!  
वो नहीं जानते,  
हर मुस्कुराहट को ख़ुशी समझे लेते है!**

**प्यार क्या है!  
हम नहीं जानते,  
उनकी हर अदा को पैगाम समझे लेते है!**

[**बापू ने दिया है**](http://pravinkumarrana.wordpress.com/2009/06/24/%e0%a4%ac%e0%a4%be%e0%a4%aa%e0%a5%82-%e0%a4%a8%e0%a5%87-%e0%a4%a6%e0%a4%bf%e0%a4%af%e0%a4%be-%e0%a4%b9%e0%a5%88/)

**आज की मायावादी दुनिया में,**

**कुछ मायावादी है!**

**आसमान पर थूकते,**

**और भूल जाते है!**

**यह स्वतंत्र आसमान,**

**बापू ने दिया है!**

**यहाँ सभी चाहते**

**तारीफ यहाँ सभी चाहते,**

**पर आपकी कातिल आखों से नज़रें मिलाकर कुछ कहा भी नहीं जाता!**

**जीना यहाँ सभी चाहते,**

**पर आपकी सुन्दरता पे मरे बिना रहा भी नहीं जाता!**

**स्वर्ग को चूम,  
खुशीओं की हवायें बिखर गई,**

**अनजान अनदेखी दिशाओं में,  
जब जब घाटी में जली बर्फ़,**

**सपनों को चूम,  
जवानी की कलियाँ बिखर गई,  
अनजान अनदेखी वादियों में,  
जब जब घाटी में जली बर्फ़,**

**जीवन को चूम,  
परिवारों की आश मिट गई  
अज्ञात अनसुलझी इतिहास की गलतीओं में,  
जब जब घाटी में जली बर्फ़,**

**क्या खोया, क्या पाया ...?  
भीगे हर नयन अपने थे !  
जब जब घाटी में जली बर्फ़,**

**-प्रवीण**

**दिन, दिन तू ये कहने को है !**

**रात, रात तू ये कहने को है!**

**हमारी रात तू तब होती है,**

**आपकी जुल्फों की चिलमन मैं,**

**मैं जब खो जाता हूँ!**

**हमारी सुबह तू तब होती है**

**जब आपके लब हमारे लब पे आते है!**

**रात बीतती है जब आपकी बाहों में,**

**तब सुबह का अहसास होता है!**

**हर रात जो बिना आपके गुजरे,**

**वो एक तड़प सी रहती है!**

**आपकी हर मुस्कान पे,**

**में प्याले डूब जाता हूँ !**

**-प्रवीण**

**ये आपकी बिखरी जुल्फ की ख़ता है,**

**हम नहीं जानते !**

**ये मेरा दिल भी धराकता है,**

**हम इतना जानते है!**

**ये आपकी खुली जुल्फ की कशिस  है,**

**हम नहीं जानते !**

**ये हवाएं आज बईमान है,**

**हम इतना जानते है !**

**ये आपकी घनी जुल्फ की छाया है,**

**हम नहीं जानते!**

**ये रेशमी रात है,**

**हम इतना जानते है!**

**ये आपकी लब पर आयी जुल्फ की शरारत है,**

**हम नहीं जानते !**

**ये मेरे प्याले में आग लगी है,**

**हम इतना जानते है !**

**ये जुल्फों के चिलमन से झाँकती आपकी मूरत  है,**

**हम नहीं जानते!**

**ये आमवास की रात में चाँद निकल आया है,**

**हम इतना जानते है!**

**ये आपकी जुल्फों से छायी खुबसूरती का नशा है,**

**हम नहीं जानते!**

**ये मेरी आखायें हरपल आपको देखती है,**

**हम इतना जानते है!**

**ये आपकी मोहब्बत है या मेरी  है,**

**हम नहीं जानते!**

**ये मेरा दिल आपका है,**

**हम इतना जानते है!**

**-प्रवीण**

**पक्ष:**

**चुनाव हुआ.**

**नयी सरकार बनी.**

**सरकार धर्मनिरपेक्ष है.**

**आरक्षण के पक्ष में है,**

**गरीबो के बारे में सोचती है,**

**सब को सामान अवसर देती है!!**

**विपक्ष:**

**कार्यकारिणी की बैठक हुई,**

**प्रेस से बातचीत हुई.**

**हारे तू क्या हुआ फिर से खड़े होंगे,**

**रचनात्मक विपक्ष की भूमिका में रहेंगे.**

**धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा को सही करेंगे,**

**राम को नहीं...**

**अब रहीम को भी चुनाव में याद करेंगे.**

**-प्रवीण**

**उनको अच्छा लगता है,**

**मेरा गुन गुनाना...**

**मेरा लिखना ...**

**क्या लिखों मैं उनकी याद में ...**

**जब वो आपनी जुल्फें बनाती है!**

**तू लगता है,**

**रात करवट ले रही है!**

**जब उनकी आँखे  जुल्फों के चिलमन से देखती है...**

**तू लगता है,**

**तन्हाई भरी रात में चाँदनी छा जाती है!**

**क्या लिखों मैं उनकी याद में ...**

**उनकी आखों,**

**कविता का सागर है!**

**उनकी जिस्म की हर मोर्ड़,**

**एक नज़म है!**

**उनकी  हर बात,**

**जीवन का एक गीत है !**

**क्या क्या लिखों ...**

**उनकी हर मुस्कान,**

**मेरे जीवन की बूँद है!**

**उनकी हर इच्छा,**

**पे मरना मेरी अब बस येही चाहत है!**

**- प्रवीण**

**“…जीवन में बहुत सी बातें हैं जो मेरा ध्यान को आकर्षित करती है**

**लेकिन उनमें से कुछ ही केवल मेरे दिल को आकर्षित कर पाती है**

**मैं उन्ही बातों को आपना लक्ष्य बनता हूँ …”**